



Table of Contents

| | |
|--|--------------------|
| HOME..... | 2 |
| Home page: Menu available in the Home page..... | 2 |
| Select Language Script..... | 3 |
| READ SAMHITA..... | 3 |
| Select Sthana..... | 4 |
| Select Chapter (Adhyaya)..... | 5 |
| Select Adhikarana (Sloka or Sloka samuha)..... | 5 |
| To read whole chapter (Purna Adhyaya)..... | 7 |
| CONTENTS..... | 10 |
| SEARCH | 11 |
| PHONETIC HELP..... | 15 |
| ABBREVIATIONS..... | 15 |
| SYSTEM REQUIREMENTS..... | 16 |
| Hardware Requirements..... | 16 |
| Software..... | 16 |
| How to enable Unicode fonts and install indic scripts in Windows Operating System..... | 16 |
| How to RUN the software..... | 17 |
| Points to Remember..... | 18 |
| For Further Help..... | 18 |



HOME

Home page: [Menu](#) available in the Home page:



|| महर्षिणा पुनर्वसुनोपदिष्टा, तच्छिष्येणाग्निवेशेन प्रणीता, चरकदृढबलाभ्यां प्रतिसंस्कृता ||

|| चरकसंहिता ||

|| श्रीचक्रपाणिदत्तविरचितया आयुर्वेददीपिकाव्याख्यया सहिता ||

Home

Read Samhita

Contents

Search Samhita

Phonetic Help

Abbreviations

User Manual

Choose Script Here
DEVANAGARI

Preface

Foreword

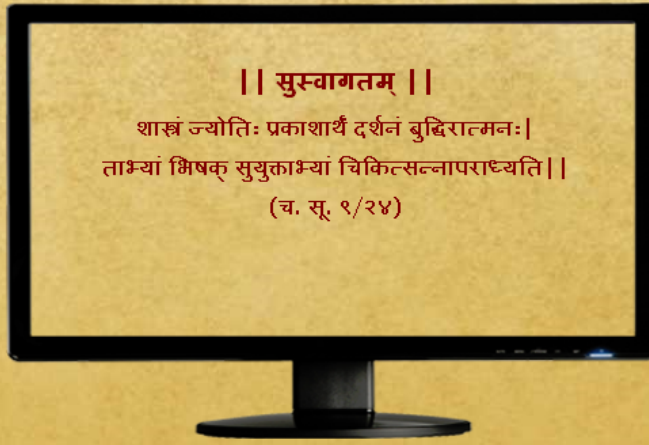
Prologue

About Samhita

About e-Book

Project Team

Contact Us



Copyright © Central Council for Research in Ayurveda and Siddha (CCRAS), New Delhi - All Rights Reserved
e-Samhita Designed and Developed by National Institute of Indian Medical Heritage, Hyderabad
Best Viewed in Firefox Browser or Internet Explorer 8.0 or higher in atleast 1024 X 768 resolution



Preface: Preface by Director, NIIMH

Foreword : Foreword by Director General, CCRAS

Prologue: Introduction to Caraka Samhita & e-book

About samhita: Links to information about the Caraka Samhita

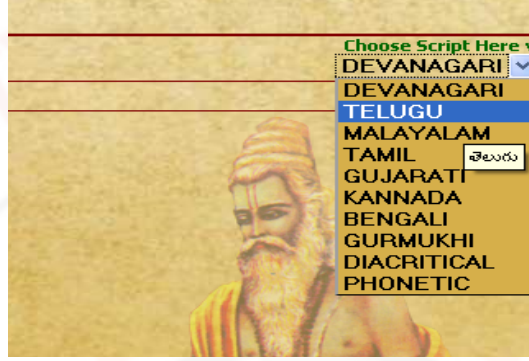
About e-Book: Links to information about the e-Book of CARAKASAMHITĀ

Project Team: Gives the information of the Team worked for the preparation of e-Samhita

Contact Us: Gives the contact information

Select Language Script

Select script by clicking - Choose script here Button at the right top corner, from available 9 scripts viz. Devanagari, English Phonetic, Diacritical, Telugu, Kannada, Malayalam, Tamil, Gurmukhi, Bengali and Gujarati. This enables to view application in the selected language script. You can change script at any point to view in various scripts.



READ SAMHITA

- To read samhita click on Read Samhita Button.
- Opened page by default displays sutra sthana - 1st chapter (adhyaya) - 1st adhikarana (both Mulam & Vyakhya (commentary) along with Foot notes - Pathabhedha or Vivarana).
- Deselecting vyakhya or/ and pathantara will display only Mulam (Sutra).
Selecting them either single or both will display mula, vyakhya and Pathantara.

Default - Vyakhya & Pathantara selected - displays mulam, vyakhya & pathantara

Select Sthana कल्पस्थानम् Select Chapter १. मदनकल्पः

<< < Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) २० (२१) > >>

व्याख्या पाठान्तरः

कल्पस्थानम् - १. मदनकल्पः

फलपिप्पलीचूर्णानि पूर्ववत् फलादीनां ^[1] पण्णामन्यतमकपायसुतानि वर्तिक्रियाः फलादिकपायोपसर्जनाः ^[2] पेया इति समानं पूर्वेण ||२१||

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणित्त कृत)

फलपिप्पलीचूर्णानीत्यादौ फलादिषट्कषायभेदेन कृतत्वात् षड् वर्तिप्रयोगा ज्ञेयाः| वर्तिक्रियायां चतुर्गुणेन क्वाथेन पाकाद्वर्त्याकारता ^[3] कर्तव्या| अत्रापि च तथा लेहादौ च सामान्योक्तेन मधुप्रक्षेपो युक्तः; तं चैके मधुनः पाकविरोधान्त्वानुमन्यन्ते। ||२१||

१. 'कोविदारादीनां' इति पा. |
 २. 'कोविदारादिकषायोपसर्जनाः' इति पा. |
 ३. 'शलाकाकारवर्तिः' इति पा. |



Only vyakhya deselected- displays mulam & pathantara of mulam

Select Sthana कल्पस्थानम् Select Chapter १. मदनकल्पः
<< < Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) २० (२१) > >>
 व्याख्या पाठान्तराः

कल्पस्थानम् - १. मदनकल्पः

फलपिप्पलीचूर्णानि पूर्ववत् फलादीनां^[१] षण्णामन्यतमकषायसुतानि वर्तिक्रियाः फलादिकषायोपसर्जनाः^[३] पेया इति समानं पूर्वेण ||२१||

१. 'कोविदारदीनां' इति पा. |
३. 'कोविदारदिकषायोपसर्जनाः' इति पा. |

Only pathantara deselected - displays mulam & commentary without pathantara

Select Sthana कल्पस्थानम् Select Chapter १. मदनकल्पः
<< < Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) २० (२१) > >>
 व्याख्या पाठान्तराः

कल्पस्थानम् - १. मदनकल्पः

फलपिप्पलीचूर्णानि पूर्ववत् फलादीनां षण्णामन्यतमकषायसुतानि वर्तिक्रियाः फलादिकषायोपसर्जनाः पेया इति समानं पूर्वेण ||२१||

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाण्डित कृत)

फलपिप्पलीचूर्णानित्यादौ फलादिषट्कषायभेदेन कृतत्वात् षड् वर्तिप्रयोगा ज्ञेयाः। वर्तिक्रियायां चतुर्गुणेन क्वाथेन पाकाद्वर्त्याकारता कर्तव्या। अत्रापि च तथा लेहादौ च सामान्योक्तेन मधुपक्षोपो युक्तः; तं चैकं मधुनः पाकविरोधान्चानुमन्यन्ते।।२१।।

Both vyakhya & pathantara deselected - displays only mulam

Select Sthana कल्पस्थानम् Select Chapter १. मदनकल्पः
<< < Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) २० (२१) > >>
 व्याख्या पाठान्तराः

कल्पस्थानम् - १. मदनकल्पः

फलपिप्पलीचूर्णानि पूर्ववत् फलादीनां षण्णामन्यतमकषायसुतानि वर्तिक्रियाः फलादिकषायोपसर्जनाः पेया इति समानं पूर्वेण ||२१||

4. To read a particular Sutra or Sloka :- Select required sthana then select chapter (adhyaya) followed by select required Ahikarana to read.

Select Sthana

Select Sthana सूत्रस्थानम्
<< सूत्रस्थानम्
निदानस्थानम्
विमानस्थानम्
शारीरम् Select Sthana Here
इन्द्रियस्थानम्
चिकित्सास्थानम्
कल्पस्थानम्
सिद्धिस्थानम्

देन मूर्तित्रयम्पेयुषे।

Select Chapter (adhyaya)

| | |
|---------------------|--|
| Select Chapter | १. रसविमानम् |
| (सूत्र सङ्ख्या) | १ (१. रसविमानम्) |
| | <input checked="" type="checkbox"/> २. त्रिविधकुक्षीयविमानम् |
| | ३. जनपदोद्ध्वंसनीयविमानम् |
| | ४. त्रिविधरोगविशेषविज्ञानीयविमानम् |
| विमानं व्याख्यास्या | ५. स्रोतोविमानम् |
| भगवानात्रेयः ॥२॥ | ६. रोगानीकविमानम् <small>Select Adhyaya Here</small> |
| व्याख्या (चक्रपाणि | ७. व्याधितरूपीयविमानम् |
| | ८. रोगभिषग्जितीयविमानम् |

Select Adhikarana (Sloka or Sloka samuha)

| | | | | | |
|----|---|--|---|---|----|
| << | < | Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) | १ (१-२) | > | >> |
| | | <input checked="" type="checkbox"/> व्याख्या | १ (१-२) | | |
| | | विमानस्थानम् - ५. | २ (३) | | |
| | | अथातः स्रोतसां विमानं व्याख्या | ३ (४-५) | | |
| | | इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥ | ४ (६-७) | | |
| | | आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपा | ५ (८) | | |
| | | य तत्परीक्षणीयं शरीरं दुष्टदुष्टस्रोतोविभागेन [१] वक्तुं | ६ (९) <small>Select Adhikarana Here</small> | | |
| | | म. | ७ (१०-२२) | | |
| | | © Central Council for Research in Ayurveda and Siddha | ८ (२३) | | |
| | | mhita Designed and Developed by National Institute of | ९ (२४) | | |
| | | Best Viewed in Firefox Browser in atleast 102 | १० (२५) | | |
| | | पुष्पिका | ११ (२६-२८) | | |
| | | पूर्ण अध्याय | १२ (२९-३१) | | |
| | | | मुच्यते ॥ १- | | |

5. Adhikarana contains either single sutra or sutra samuha (multiple sutras) along with its Vyakhya (commentary). Adhikarana is mainly based on vyakhya (commentary), which has grouped either part of sutra or whole sutra or combing multiple sutras.

Example1: single sutra (65th) with commentary

| | | | |
|---------------|--------------|--|--|
| Select Sthana | सूत्रस्थानम् | Select Chapter | १. दीर्घज्जीवितोऽध्यायः |
| << | < | Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) | ३८ (६५) |
| | | <input checked="" type="checkbox"/> व्याख्या | <input checked="" type="checkbox"/> पाठान्तराः |
| | | सूत्रस्थानम् - १. दीर्घज्जीवितोऽध्यायः | |
| | | स्वादुरम्लोऽथ लवणः कटुकस्तिक एव च । | |
| | | कपायश्चेति पट्कोऽयं रसानां सङ्ग्रहः स्मृतः ॥६५॥ | |
| | | आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणिदत्त कृत) | |
| | | रसविशेषानाह- स्वादुरित्यादि । अत्र सर्वपाणिनामिहत्वादादौ मधुर उक्तः; तदनु च पाण्यभीष्टोत्कर्षक्रमेणैवाम्तादिनिर्देशक्रमो बोधव्यः । षट्क इति पुनः सङ्ख्याकरणं परवादिमतसप्तसङ्ख्यत्वादिनिषेधार्थम् । अयं सङ्ग्रह इत्यनेनावन्तरभेदबहुत्वं तथा वक्ष्यमाणरससंसर्गबहुत्वं च दर्शयति ॥ ६५ ॥ | |



Example 2 : part of sutra (49)

Select Sthana सूत्रस्थानम् Select Chapter १. दीर्घञ्जीवितीयोऽध्यायः

Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) २२ (४९) व्याख्या पाठान्तराः

सूत्रस्थानम् - १. दीर्घञ्जीवितीयोऽध्यायः

...प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते ||४९||

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणिदत्त कृत)

क्रमागतं कर्म निर्दिशति- प्रयत्नादीत्यादि। प्रयत्नं प्रयत्नः कर्मैवाद्यमात्मनः; यथा- "तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्" (पा.अ.१पा.१सू.९) इत्यत्र व्याख्यातम्। आदिशब्दः प्रकारवाची। तेन संस्कारगुरुत्वादिजन्यकृत्स्नक्रियावरोधः। यद्यपि चेष्टितं प्राणिव्यापार उच्यते, तथाऽपीह सामान्येन क्रिया विवक्षिता। चेष्टितपदेनैव सर्वकर्मलाभे सिद्धे वमनादिकर्मनिषेधे च सिद्धे प्रयत्नादीति पदं सुसूक्ष्मप्रयत्नरूपकर्मव्यापित्वद्योतनार्थम्^[१]। अन्ये तु प्रयत्नादीति प्रयत्नकारणमिति ब्रुवते, प्रयत्नग्रहणं च कारणोपलक्षणं वदन्ति; तेन गुरुत्वादिकार्यस्यापि कर्मणो ग्रहणमिति। प्रयत्नशब्दश्चायुर्वेदेऽपि कर्मवचनो दृश्यते; "प्रवृत्तिस्तु चेष्टा कार्यार्था, सैव क्रिया प्रयत्नः कार्यसमारम्भश्च" (वि.अ.८) इति वचनात्। ||४९||

१. 'सुसूक्ष्मरूपकर्मव्यापित्वद्योतनार्थम्' इति पा.।

Example 3 : group of sutra including part of 86th & 88th sutra, whole of 87th sutra were combined to form a adhikarana

Select Sthana सूत्रस्थानम् Select Chapter १. दीर्घञ्जीवितीयोऽध्यायः

Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) ४५ (८६-८७) व्याख्या पाठान्तराः

सूत्रस्थानम् - १. दीर्घञ्जीवितीयोऽध्यायः

सर्पिस्तैलं वसा मज्जा स्नेहो दिष्टश्चतुर्विधः^[१] ||८६||

पानाभ्यञ्जनवस्त्यर्थं नस्यार्थं चैव योगतः।

स्नेहना जीवना वर्णया बलोपचयवर्धनाः ||८७||

स्नेहा ह्येते च विहिता वातपित्तकफापहाः |८८|

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणिदत्त कृत)

महास्नेहेषु सर्पिरादौ पठितं, प्राधान्यात्; वचनं हि- "नान्यः स्नेहस्तथा कश्चित् संस्कारमनुवर्तते। यथा सर्पिरतः सर्पिः सर्वस्नेहोत्तमं मतम्" (नि.अ.१) इति। ||८६-८७||-

१. 'दृष्टः' इति पा.।

5. In Read Samhita -

- One can read a chapter by adhikarana (sloka samuha) wise through browsing to & fro to previous/ next adhikarana or
- can also read the whole chapter by selecting purna adhyaya via Select adhikarana menu.
- By clicking First/ Last button of Select adhikarana, one can go to first/ last adhikarana of the chapter.

To go to next adhikarana

Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) २० (२१) व्याख्या पाठान्तराः

Next



To go to previous adhikarana

<< < Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) १० (१२) > >>
Previous व्याख्या पाठान्तराः

To go to First adhikarana

<< < Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) १० (१२) > >>
First व्याख्या पाठान्तराः

To go to Last adhikarana

<< < Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) १० (१२) > >>
 व्याख्या पाठान्तराः Last

To read whole chapter (purna adhyaya)

Select Sthana कल्पस्थानम् Select Chapter २. जीमूतककल्पः
<< < Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) १ (१-२) > >>
 व्याख्या
कल्पस्थानम् - २. जीमूतककल्पः
अथातो जीमूतककल्पं व्याख्याः ४ (५-७)
इति ह स्माह भगवानात्रेयः ५ (८-१०)
आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणिनीय) ६ (११)
मदनकल्पान्तरमनपायित्वेनेह्वाकवादिद्रव्येभ्यः प्राधान्याज्जीमूतकस्य जीमूतकस्य ७ (१२)
तथा पूर्वनिवेशनं ज्ञेयम्। तेनापरवमनकल्पानामप्यध्यायसम्बन्धोऽत्रैवोक्तो ज्ञेयः। ८ (१३)
क्रमोऽतिदेशादुन्नेतव्यः। १-२।। पुष्पिका
पूर्ण अध्याय

Note: While selecting read purna adhyaya (whole chapter) - it takes some time depending on the length of the chapter. Big chapters may take much time, which also depends on your system speed. Hence you are advised not to select purna adhyaya for big chapters unless you definitely require it. If a pop up window arises asking to stop the script or continue the script - click on **continue**.

6. To read particular sutra (sloka) or sutras - it/they may be viewed in either single adhikarana or multiple adhikarnas based on its/their position/inclusion in single or multiple adhikaranas. Sloka number(s) is/are shown in brackets after adhikarana number.



- eg. (a). 21 (17) meaning 17th sloka is present in 21st adhikarana.
(b). 45 (86-88) means from sloka 86 to sloka 88 are present in 45th adhikarana.

Example 1: To read **ca.ni.1/17** (Caraka Nidana 1st chapter 17th sutra)

select Nidana Sthana- select 1st chapter - select adhikarana (sloka samkya) : 21 (17)

Select Sthana निदानस्थानम् Select Chapter १. ज्वरनिदानम्
Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) २१ (१७)
 व्याख्या पाठान्तराः

निदानस्थानम् - १. ज्वरनिदानम्

अथ खल्वष्टाभ्यः कारणेभ्यो ज्वरः सञ्जायते मनुष्याणां; तद्यथा- वातात्, पित्तात्, कफात्, वातपित्ताभ्यां, वातकफाभ्यां, पित्तकफाभ्यां, वातपित्तकफेभ्यः, आगन्तोरष्टमात् कारणात् ||१७||

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणिदत्त कृत)

ज्वरस्य निरूपणीयस्य कारणकृतं भेदमाह- अथेत्यादि। एतच्च कारणं वातादि सन्निकृष्टम्। मनुष्याणामिति वचनेन गोगजशकुत्यादीनां नावश्यमिदं ज्वराष्टत्वमनुगामीति दर्शयति; तथाहि- हस्त्यादीनां पाकलादयो नाष्टविधाः प्रतिपाद्यन्ते। आगन्तोरिति वक्तव्ये अष्टमादिति वचनमागन्तोरभिघातादिचतुष्कारणभेदेऽप्येकत्वोपदर्शनार्थम्। आगन्तुर्हि कारणभेदोत्पन्नोऽप्येकरूप एव, यत आगन्तुः सर्वा व्यथापूर्वमेव भवति; यस्तु तत्र, "कामशोकभयाद्वायुः" (चि.अ.३) इत्यादिना भेदो वक्तव्यः, स वातादिकृत एवेति भावः। | १७ |

Example2: To read **ca.vi.1/22** (caraka vimana 1st chapter 22nd sutra)

Select vimana sthana- select 1st chapter - select adhikaranas 21 to 28 which contain sutra 22 with sub units 1-7.

Select Sthana विमानस्थानम् Select Chapter १. रसविमानम्
Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) २१ (२२(१))
 व्याख्या

विमानस्थानम् - १. २१ (२२(१))

तत्र प्रकृतिरुच्यते स्वभावो यः, स पुनराहारौषधद्रव्याणां स्वाभाविको ; तद्यथामापमुद्रयोः, शूकरैणयोश्च
|२२|

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणिदत्त कृत)

उक्तानि प्रकृत्यादीना विभजते- तत्रेत्यादिना। स्वाभाविक इति संस्काराद्यकृतः। म ; तद्यथामापमुद्रयोः, शूकरैणयोश्च
गुरुत्वं, एणे च लघुत्वम्। |२२(१)|

२१ (२२(१))
२१ (२२(२))
२२ (२२(३))
२३ (२२(४))
२४ (२२(५))
२५ (२२(६))
२६ (२२(७))
२७ (२२(८))
२८ (२२(९))
२९ (२३)
३० (२४)



Example 3: To read **ca.si.1/12** (caraka siddhi 1st chapter 12th sutra) : Select siddhi sthana - select 1st chapter - Select adhikarana no. 10 containing sutra no.12. But as it contains only one pada of 12th sutra. To view 1st pada of 12th chapter select previous button. This is because certain slokas are distributed over different adhikaranas. eg. 12th sloka in 9th & 10th adhikarana. 13th sloka in 10th & 11th adhikarana. Certain slokas are even present in three adhikaranas. Hence browse previous or/and next adhikarana for getting required sutra (sloka) completely.

Select Sthana सिद्धिस्थानम् Select Chapter १. कल्पनासिद्धिः

<< < Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) १० (१२) > >>

Previous व्याख्या पाठान्तराः

सिद्धिस्थानम् - १. कल्पनासिद्धिः

यथाऽणुरग्निस्तृणगोमयायैः सन्धुक्ष्यमाणो भवति क्रमेण ||१२||
महान् स्थिरः सर्वपचस्तथैव [१] शुद्धस्य पेयादिभिरन्तरग्निः |१३|

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणिदत्त कृत)

पेयादिक्रमस्य विशोधनमन्दीकृताग्नेर्दीपकत्वं दृष्टान्तेन दर्शयन्नाह- यथेत्यादि | १२ | -

१. 'सर्वसहस्तथैव' इति पा. |

Select Sthana सिद्धिस्थानम् Select Chapter १. कल्पनासिद्धिः

<< < Select अधिकरणम् (सूत्र सङ्ख्या) ९ (११) > >>

व्याख्या पाठान्तराः

सिद्धिस्थानम् - १. कल्पनासिद्धिः

पेयां विलेपीमकृतं कृतं च यूषं रसं त्रिद्विरथैकशश्च ||११||
क्रमेण सेवेत विशुद्धकायः प्रधानमध्यावरशुद्धिशुद्धः |१२|

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणिदत्त कृत)

वमनविरेचनोत्तरभाविपेयादिक्रममाह- पेयां विलेपीमित्यादि। यवागूः बहुसिक्था। विलेपी विरलद्रवा। उक्तं हि- 'सिक्थकै रहितो मण्डः, पेयसिक्थसमन्विता। यवागूर्बहुसिक्था स्याद्विलेपी विरलद्रवा' इति। अत्र अकृतयूषः स्नेहलवणाद्यसंस्कृतः, कृतयूषः स्नेहलवणादिसंस्कृतः; एतदुक्तं स्यात्। रसेऽपि कृताकृतव्यवस्था। यदुक्तं सूत्रशास्त्रे 'अस्नेहलवणं सर्वमकृतं कटुकैर्विना। विज्ञेयं लवणस्नेहकटुकैः संस्कृतं कृतम्' इति। त्रिरिति अन्नकालत्रयं व्याप्य, द्विरिति अन्नकालद्वयम्, एकश इति एकान्नकालम्; एतच्च त्रिरित्यादि प्रत्येकं पेयादिभिः सम्बध्यते। एतच्च



CONTENTS

Clicking on Contents will display similar to Read samhita with one difference. Instead of the adhikarana, Vishayanukramanika (sloka samkhya) - i.e. contents of the chapter with headings are displayed.

Clicking the Select Vishayanukramanika (sloka samkhya) menu one can choose a heading in contents of the chapter which may contain one or multiple adhikaranas (one or multiple slokas) - which will be displayed in single page.

Example 1 :

snehabasteH shadapadaH (25 sloka) - of caraka siddhi - snehasiddhi chapter will display one adhikarna only which includes 25th sloka.

| | | | | |
|--------------|----------|----------------|---------------|---------------|
| Read Samhita | Contents | Search Samhita | Phonetic Help | Abbreviations |
|--------------|----------|----------------|---------------|---------------|

Select Sthana सिद्धिस्थानम् Select Chapter ४. स्नेहव्यापत्सिद्धिः

Select विषयानुक्रमणिका (सूत्र सङ्ख्या) स्नेहवस्तेः षडापदः(२५)

व्याख्या पाठान्तराः

सिद्धिस्थानम् - ४. स्नेहव्यापत्सिद्धिः
स्नेहवस्तेः षडापदः

वातपित्तकफात्यन्नपुरीषैरावृतस्य च ।
अभुक्ते च प्रणीतस्य स्नेहवस्तेः षडापदः ॥२५॥

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणिदत्त कृत)

वातपित्तेत्यादिना स्नेहवस्तेर्व्यापदः प्राह। एताश्च व्यापदो मिथ्यायोगेन स्नेहस्य क्रियमाणा उच्यन्ते; प्रतिज्ञातं हि 'मिथ्याप्रणिहितानां च व्यापद' इति, तेन स्नेहायोगातियोगजन्यव्यापदाभिधानवसर एव; अनुवासनायोगातियोगजन्याश्च व्यापदः कल्पनासिद्धावेवोक्ताः; तद्वैपजं चातिस्नेहिते शोधनवस्तिः, अस्नेहिते पुनः स्नेहवस्तिदानमेव ज्ञेयम्। एतच्च "तस्मान्निरूढः संस्नेहो निरूहश्चानुवासितः" इत्यादिनोक्तत्वात् प्रसङ्गेनेहोक्तम् ^[1] ॥२५॥

१. 'प्रबाधनेनोक्तं' इति, 'पबान्धनेनोक्तं' इति च पा.।



Example 2 :

Ucitasnehapratyagamana kala (46-47slokas) - of caraka siddhi -kalpanasiddhi chapter will display 3 adhikarnas (45th to 49th sloka). To display 1st pada of sloka no. 46 it also includes 45th sloka which is a part of 1st adhikarana. To display 2nd pada of sloka no. 47, it also includes 48th sloka & 1st pada of 49th sloka which is a part of last adhikarana of this heading.

| Title | Contents | Search Samhita | Phonetic Help | Abbreviations |
|-------|----------|----------------|---------------|---------------|
|-------|----------|----------------|---------------|---------------|

Select Sthana सिद्धिस्थानम् Select Chapter १. कल्पनासिद्धिः
 Select विषयानुक्रमिका (सूत्र संहया) उचितस्नेहप्रत्यागमनकालः (४६ - ४७)

व्याख्या पाठान्तराः

सिद्धिस्थानम् - १. कल्पनासिद्धिः
 उचितस्नेहप्रत्यागमनकालः

अथाःशरीरोदरबाहुपृष्ठपार्श्वेषु रूयूक्षधरं च गात्रम् ॥ ४५ ॥
 ग्रहश्च विष्णुमूत्रसमीरणानामसम्यगेतान्यनुवासितस्य ॥ ४५ ॥
 हृत्लासमोहकतमसादमूर्च्छाविकलिका चात्यनुवासितस्य ॥ ४६ ॥

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणित्त कृत)

अथ इत्याद्यनुवासनायोगलक्षणम् ॥ कक्षाखरता चात्र शरीरस्यास्नेहनादेय ॥ हृत्लासादि अतियोगलक्षणम् ॥ ४५ ॥-

यस्येह यामाननुवर्तते त्रीन स्नेहो नरः स्यात् ॥ स विशुद्धदेहः ॥ ४६ ॥
 आश्वगतेऽन्यस्य पुनर्द्वितीयः स्नेहो न संस्नेहयति ह्यतिष्ठन् ॥ ४७ ॥

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणित्त कृत)

उचितस्नेहप्रत्यागमनकालमाह- परस्वेत्यादि ॥ यामानिति प्रह्वानम् ॥ स विशुद्धदेह इति स अनुवासनप्रयोगसम्बन्धयोगदानुवासनस्यापत्तिरिति इत्यर्थम् ॥ आश्वगते इति शीघ्रं प्रत्यागते, अन्यस्तु विधेय इति तद्व्याप्यः स्नेहो देयम् पुनः स्नेहदानोपपत्तिमाह- स्नेहो न संस्नेहयति ह्यतिष्ठन्ति ॥ ४६ ॥-

त्रिषन्मताः कर्म ॥ नु वस्तयो हि कालस्ततोऽर्थेन ततश्च योगः ॥ ४७ ॥
 सान्वासाना द्वादश वै निरुहाः प्राक् स्नेह एकः परतश्च पञ्च ॥
 काले ॥ त्रयोऽन्ते पुरतस्तथैकः स्नेहा निरुहान्तरपितांश्च षट् स्युः ॥ ४८ ॥
 योगे ॥ निरुहास्त्रय एव देयाः स्नेहाश्च पञ्चैव परादिमध्याः ॥ ४९ ॥

आयुर्वेददीपिका व्याख्या (चक्रपाणित्त कृत)

समग्रति सहस्रयाप्रशस्योत्तविशेषमाह- निशदित्यादि ॥ कर्मकालयोगसंज्ञा यथाकर्म त्रिषन्मताः शोधशब्दितसमुदयेषु लेपा ॥ कालस्ततोऽर्धेनैत्यत्र अर्धशब्दो न समाप्रतिवचनः ॥ तत्र त्रिषदपि शोधश्च भवति ॥ सान्वासाना इत्यादिना कर्मादीनां निरुहानुवासनविभागमाह ॥ एकानुवासनं दत्त्वा दीपन्त इति सान्वासाना, परानुवासनेन पन्थेकं योगाद् द्वादश निरुहाः त्रयोविंशतिर्भूतयो भवन्ति ॥ पाणिति आरुणे ॥ परत इति द्वादशनिरुहोत्तरकाले ॥ निरुहान्तरपितांश्च षट् स्युरिति निरुहगन्तरी कृत्वा, एव च द्वादश वस्तुयः पूर्णेषाम् पञ्चैव परादिमध्या इति पञ्च स्नेहा अन्ते कर्त्तव्ये आदी च येषां विभक्तयस्तै तथा; अत्र चादौ स्नेहद्वयम्, अन्ते च स्नेहद्वयम्, निरुहत्रयमन्ते चैकानुवासनम्, एव पञ्च स्नेहा भवन्ति ॥ च तु निरुहदिन यवानुवासनं यदन्ति तन्मते आदायैक एव, अन्तेऽपि दिनान्तरं एक, एव पञ्च भवन्ति; एव कर्मकालयोपि निरुहदिन एव दिनान्तरं याऽनुवासनं व्याख्येयम् ॥ अत्र चैकस्नेहान्तरतानां निरुहाणां दाने वातसौमो नाशकनीयः, कर्मादिषु निरुहा पापान्ब्रह्मिलनया दीपन्ते, ते स्निग्धा एवेति कृत्या न वातसौमिका भवन्ति ॥ एते च कर्मादयो येषां शास्त्रप्रदेशेषु न द्यवाहियन्ते, तथाऽपि तद्विषयव्यवहाराधेनेवेयं कर्मादिसंज्ञा, यथा यमकमहाच्छपानादिसंज्ञा; तेन कर्मादिसंज्ञायाः शास्त्रे व्यपहारदर्शनात् कर्मादिप्रतिपादको यन्थोऽनाथ इति यदुच्यते, तन्निसंज्ञा कर्मादिसंज्ञा च तन्त्रान्तरंऽप्यस्ति ॥ तथाहि जलकर्म- 'वस्तुयस्त्रिंशत् शोधशब्दो च कर्मकलयोगाः निरुहाः स्नेहान्तरिता द्वादश षट् त्रयः एकस्नेहास्त्रयाः पञ्चमेकान्ता' इति; हापितेऽपि- 'त्रिंशकं कर्म बुधा यदन्ति' इत्यायुक्तम् ॥ कर्मादीनां प्रयोगं केचिद्द्वालादिषु यदन्ति ॥ ४७-४८ ॥-

१. 'वर्षे' इति पा. |
 २. '...न्यनुवासिते स्युः' इति पा. |
 ३. 'कर्मसु' इति पा. |
 ४. 'कावस्योऽन्ते इत्' पा. |
 ५. 'योको विस्तरास्त्रय एव' इति पा. |
 ६. 'समविशेषावप्रतिवचनः' इति पा. |

SEARCH

Clicking SEARCH button displays the search box.

The word to be searched should be typed in **PHONETIC ENGLISH**. For knowing how to type in phonetic english click either **IN PHONETIC** link or **PHONETIC HELP** button which will open a new Window / Tab to show the keyboard help. You can select the script on right hand top corner to view the equivalent phonetic english equivalents.



Typing a word in search box followed by clicking **Go** button will display results.

Results will display the word in the script selected

Results will include all the findings in which the search word is present either singly or as prefix or as suffix or in middle.

Results in default mode will display all occurrences of the search word in mula & vyakhya in separate columns.

One can choose either mula or vyakhya or both for searching by selecting or deselecting them.

Results displayed will be in abbreviated form (- which is in accordance with common practice of referencing standard Ayurvedic text by scholars) & with a hyperlink.

Example:

- (1). **ca.si.3/13** (Caraka samhita, siddhi sthana, 3rd chapter, from 13th Sloka);
- (2) **ca.vi.8/13-18** (Caraka samhita, vimana sthana, 8th chapter, from 13 to 15 slokas)

Clicking hyperlink will display the adhikarna which includes the searched word in a **New Window / Tab**.

For viewing different results click on each to show them in new Window/Tab. One has to go to Search Main page to see and click hyperlinks and go to new window to view it in sloka or vyakhya.

The number of occurrences of the word in adhikarana will be displayed at the bottom of the window.

A few words ideal for search in caraka samhita:



niruhabasti

SEARCH

Type [\(in Phonetic\)](#) Your Search Word Here (atleast 2 characters)

मूलम् व्याख्या

Search Word - निरुहबस्ति

Click on Search result to Display

| In मूलम् | In व्याख्या |
|-------------------|-----------------------|
| 1. च. चि. २६ / ११ | 1. च. सि. ७ (४३-४६) |
| 2. च. चि. २६ / ४५ | |

pa~jcakarma (Pancakarma) - showing 1 reference in mulam & 21 in vyakhya

SEARCH

Type [\(in Phonetic\)](#) Your Search Word Here (atleast 2 characters)

मूलम् व्याख्या

Search Word - पञ्चकर्म

Click on Search result to Display

| In मूलम् | In व्याख्या |
|--------------------|-------------------------|
| 1. च. चि. ३० / १२६ | 1. च. सू. १ (८०-८५) |
| | 2. च. सू. १ (११६-११९) |
| | 3. च. सू. २ (१-६) |
| | 4. च. सू. २ (११-१४) |
| | 5. च. सू. २ (१५) |
| | 6. च. सू. २ (१८-३३) |
| | 7. च. सू. २ (३५) |
| | 8. च. सू. २ (३६) |
| | 9. च. सू. ३ (१-२) |
| | 10. च. सू. ६ (२२-२६) |
| | 11. च. सू. १८ (६) |
| | 12. च. चि. ५ (४-५) |
| | 13. च. चि. ७ (४-८) |
| | 14. च. चि. २७ (१-२) |
| | 15. च. क. १ (१-२) |
| | 16. च. सि. १ (३-५) |
| | 17. च. सि. १ (२०-२१) |
| | 18. च. सि. १ (५०-५२) |
| | 19. च. सि. १ (५३) |
| | 20. च. सि. २ (१-२) |
| | 21. च. सि. २ (८-९) |



pa~jcakarm (Pancakarm) showing 12 references in mulam & 33 in vyakhya

SEARCH

Type [\(in Phonetic\)](#) Your Search Word Here (atleast 2 characters)

मूलम् व्याख्या

Search Word - पञ्चकर्म

Click on Search result to Display

| In मूलम् | In व्याख्या |
|------------------|-------------------------|
| 1. च. सू. २/१५ | 1. च. सू. १ (८०-८५) |
| 2. च. सू. २/३४ | 2. च. सू. १ (११६-११९) |
| 3. च. सू. २/३५ | 3. च. सू. २ (१-६) |
| 4. च. सू. २८/२७ | 4. च. सू. २ (११-१४) |
| 5. च. सू. २९/७ | 5. च. सू. २ (१५) |
| 6. च. सू. ३०/६५ | 6. च. सू. २ (१८-३३) |
| 7. च. चि. ७/६ | 7. च. सू. २ (३५) |
| 8. च. चि. ३०/१२६ | 8. च. सू. २ (३६) |
| 9. च. चि. ३०/१६० | 9. च. सू. ३ (१-२) |
| 10. च. सि. १/६० | 10. च. सू. ६ (२२-२६) |
| 11. च. सि. २/१ | 11. च. सू. ८ (१३) |
| 12. च. सि. २/३ | 12. च. सू. १८ (६) |
| | 13. च. सू. २८ (२३-३०) |
| | 14. च. श. ८ (१७) |
| | 15. च. चि. ५ (४-५) |
| | 16. च. चि. ७ (४-८) |
| | 17. च. चि. १५ (११४-११५) |
| | 18. च. चि. २७ (१-२) |
| | 19. च. चि. २७ (३-१५) |
| | 20. च. चि. २७ (६२) |
| | 21. च. चि. ३० (१२६) |
| | 22. च. क. १ (१-२) |
| | 23. च. सि. १ (३-५) |
| | 24. च. सि. १ (६) |
| | 25. च. सि. १ (२०-२१) |
| | 26. च. सि. १ (२६) |
| | 27. च. सि. १ (५०-५२) |
| | 28. च. सि. १ (५३) |
| | 29. च. सि. २ (१-२) |
| | 30. च. सि. २ (३) |
| | 31. च. सि. २ (४-७) |
| | 32. च. सि. २ (८-९) |
| | 33. च. सि. ६ (७) |

NOTE: To get maximum results -

- (1) try by leaving last letters especially vowels of the search word.
- (2) try by using minimum letters of the search word.
- (3) try various synonyms of search word.



PHONETIC HELP

Click Phonetic help button to get the keyboard help. You can also view it in different Language Scripts available by selecting required script.

| Phonetic Help | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------------|------|----|-----|-----|------|--------|----|------|-----|------|----|-----|----|----|-----|----|-----|----|----|-----|----|-----|----|
| Vowels | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| a | A | i | I | u | U | Ru | RU | e/E | ai | o/O | au | aM | aH | | | | | | | | | | |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ऋ | ॠ | ए | ऐ | ओ | औ | अं | अः | | | | | | | | | | |
| Consonants | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ka | kha | ga | gha | ~ga | ca | cha | ja | ~ja | Ta | Tha | Da | Dha | Na | ta | tha | da | dha | na | pa | pha | ba | bha | ma |
| क | ख | ग | घ | ङ | च | छ | ज | झ | ट | ठ | ड | ढ | ण | त | थ | द | ध | न | प | फ | ब | भ | म |
| ya | ra | la | va | sha | Sha | sa | ha | kSha | tra | j~ja | | | | | | | | | | | | | |
| य | र | ल | व | श | ष | स | ह | क्ष | त्र | ज्ञ | | | | | | | | | | | | | |
| Others | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ~a | hA@m | .h | H | .Da | .Dha | OM/AUM | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| s | हाँ | र् | ०: | ड | ढ | ॐ | | | | | | | | | | | | | | | | | |

ABBREVIATIONS

Click on this button to view abbreviations and their full form in a table form.

| Abbreviations in e-Samhita | |
|----------------------------|--------------------|
| अ. | अध्याय |
| अ. ह. | अष्टाङ्गहृदय |
| अ. सं. | अष्टाङ्गसङ्ग्रह |
| च. | चरकसंहिता |
| चक्र. | आयुर्वेददीपिका |
| चि. | चिकित्सास्थानम् |
| ह. पु. | हस्त लिखित पुस्तके |
| इ. / इं. | इन्द्रियस्थानम् |
| इति पा. | इति पाठान्तर |
| का. | काश्यपसंहिता |
| क. | कल्पस्थानम् |
| क. सि. | कल्पसिद्धिस्थानम् |



SYSTEM REQUIREMENTS

Hardware Requirements :

Pentium IV Processor or Later (or Other Equivalent Processors)

CD or DVD Drive

Minimum 128 MB RAM

Best viewed in 1024 X 768 or Higher Resolution

Software :

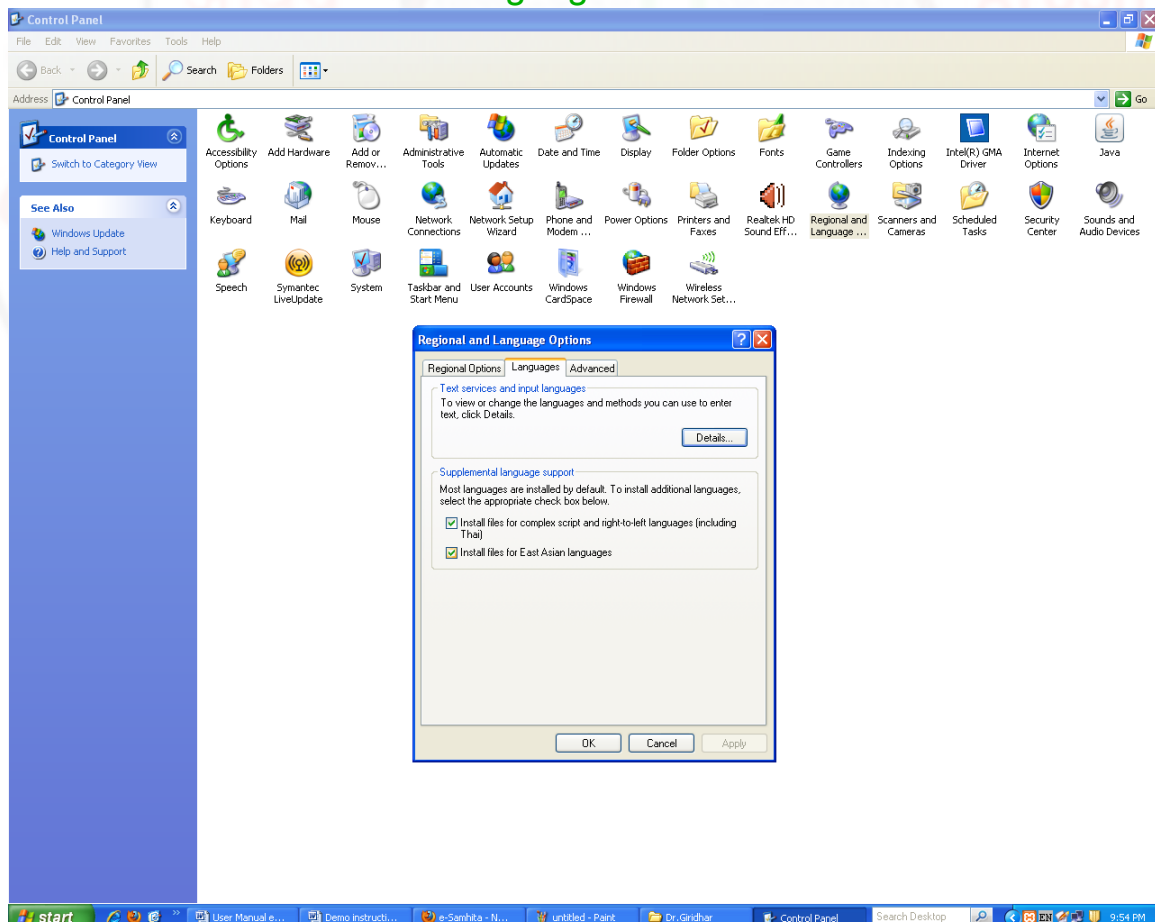
WindowsXP SP2 or Later with Unicode, Indic & Complex scripts enabled. (See below)

Better viewed in Mozilla Firefox 3.5 (portable Firefox is available in the CD)

Even if interested for viewing in other browsers (Internet Explorer 8 etc) opened browser should be kept open (i.e. **Default Browser should not be closed**)

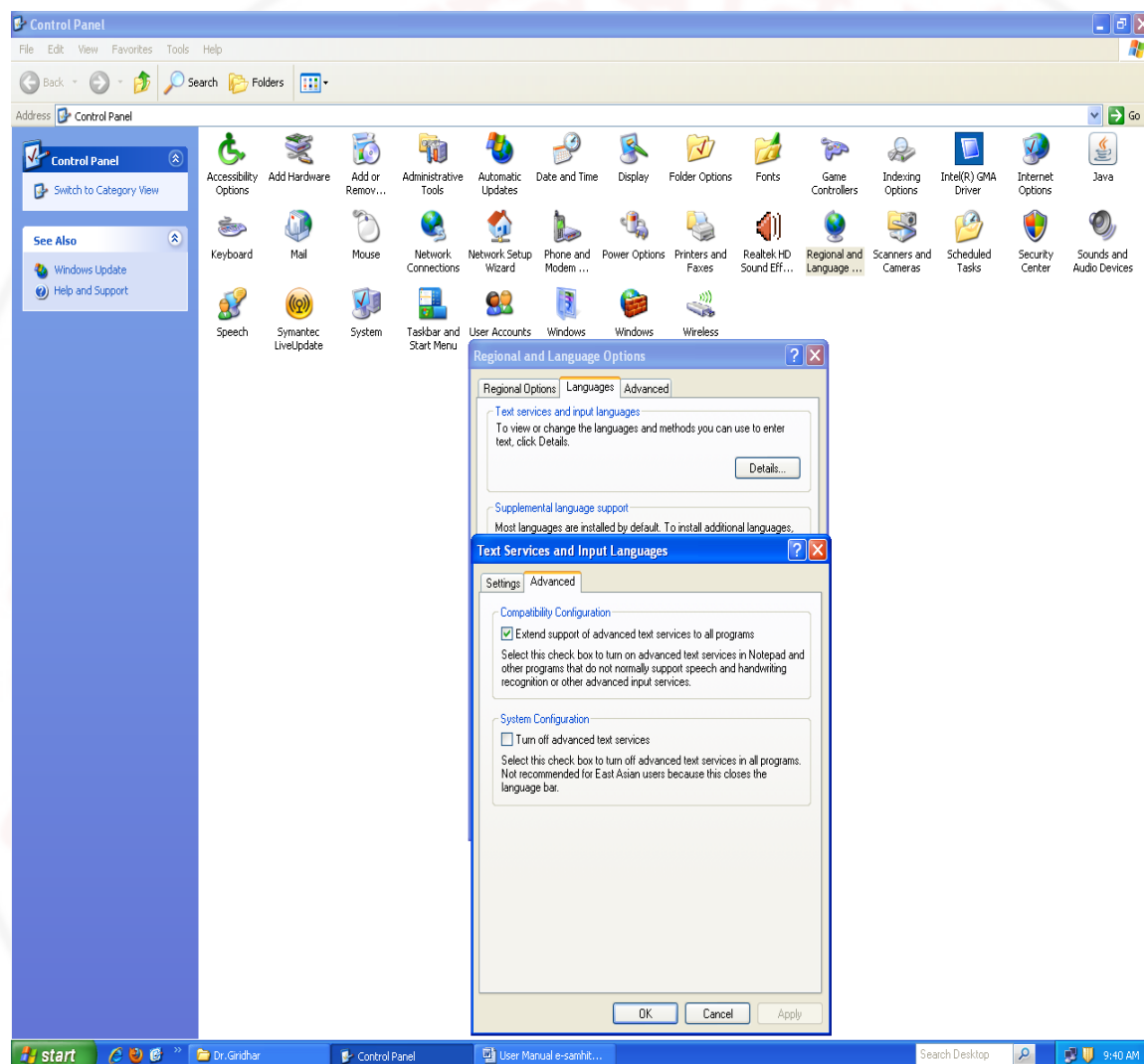
How to enable Unicode fonts and install indic scripts in Windows Operating System.

(1). Start → Control Panel →Regional & Language Options →Languages → Select '**Install files for complex scripts and right to left languages**' & Select '**Install files for East Asian Languages**'.



2). Start → Control Panel → Regional & Language Options → Languages → Details → Advanced → select '**Extend support of advanced text services to all programs**' (& Do not Select '**Turn off advanced text services**')

Note: Both of these require Windows Installation CD. Restart is needed after installation.



How to RUN the software:

1. Insert CD.
2. User will be asked to OPT for Running the Application DIRECTLY from CD or INSTALL on the LOCAL MACHINE and RUN.
3. While installing on local machine user has to chose the destination path. eg C:\Program Files
4. Once installed on the local machine, the user need not put the CD for running the Application.



Points to Remember:

1. Closing Defaultly opened Browser window will automatically shutdown the server.
2. For advanced users & on other Operating Systems :
 1. The application uses port 4001 by default. You may change (if necessary) this setting in the file pms_config.ini in the server folder.
 2. For OS other than Windows you need to have a working intranet web server configured for PHP, XML.
 3. If you already have an intranet server running - you want to host e-samhita, put the contents of server/htdocs/ecaraka in your web server root. Now the application is ready to be viewed on intranet.

For Further Help :

Director

National Institute of Indian Medical Heritage

(formerly known as Indian Institute of History of Medicine)

3rd Floor, Osmania Medical College

Putlibowli, Hyderabad - 500 095

Andhra Pradesh, India

Phone : 040-24746523

Tele Fax : 040-24657388

e-Mail : iihm@ap.nic.in

iihm_ccras@yahoo.co.in

Website : <http://iihm.ap.nic.in>